गोवर्धन
मठ
संगोष्ठी मार्गदर्शन,
प्रारूप
एवं
संघठनात्मक सूत्र
www.govardhanmath.org
Govardhan Math

संगोष्ठी मार्गदर्शन

जय जगन्नाथ !

पूज्य पाद श्रीमज्जगद्गुरू शङ्कराचार्य गोवर्द्धन पुरीपीठाधीश्वर महाराज जी के श्रीचरणों में कोटि-कोटि प्रणाम। पूज्य शङ्कराचार्य जी के निज सचिव स्वामी निर्विकल्पानन्द सरस्वती जी के श्री चरणों में कोटि कोटि प्रणाम

जैसे कि आप सभी को विदित है ऋग्वेदीय पूर्वाम्नाय पुरी पीठाधीश्वर शङ्कराचार्य स्वामी निश्चलानंद सरस्वती जी महाभाग ने उद्घोषणा की है कि आने वाले साढ़े तीन वर्षों की अल्पावधि में भारत हिन्दू राष्ट्र बनेगा। जिसका अस्सी प्रतिशत कार्य पूर्ण हो चुका है मात्र बीस प्रतिशत कार्य शेष है। इसकी पूर्णाहुति के लिए शङ्कराचार्य महाभाग द्वारा मार्गदर्शित पीठपरिषद् के अन्तर्गत आदित्य वाहिनी एवं आनन्द वाहिनी द्वारा जन-जागरण अभियान के अन्तर्गत देश के अलग-अलग राज्यों में साप्ताहिक संगोष्ठी आयोजित करने का अभियान चलाया जा रहा है !

संगोष्ठी का उद्देश्य:- वैचारिक क्रान्ति

अन्यों के हित का ध्यान रखते हुए हिन्दुओं के अस्तित्व एवं आदर्श की रक्षा तथा भारत की सुरक्षा एवं अखण्डता सुनिश्चित करते हुए श्रीगोवर्द्धनमठ पुरीपीठाधीश्वर शङ्कराचार्य पूज्य निश्चलानन्द सरस्वती महाभाग जी के भारत को साढ़े तीन साल की अल्पावधि में हिन्दू राष्ट्र बनाने के लक्ष्य में सक्रिय सहभागिता का परिचय देते हुए पंचायत, तहसील, ज़िला एवं राज्य स्तर पर आदित्य वाहिनी संगठन को सुदृढ़ करना तथा इस उद्देश्य की पूर्ति होती जन-जागरण अभियान के अन्तर्गत मठ-मन्दिरों को शिक्षा, रक्षा , सेवा , धर्म और मोक्ष का संस्थान बनाकर वैचारिक क्रान्ति हेतु साप्ताहिक संगोष्ठी प्रकल्प का आयोजन करना।

एक साथ एक पवित्र उद्देश्य की पूर्ति के लिए समान विचारधारा वाले लोगों का समान कार्य प्रक्रिया अपनाकर सहयोग प्रस्तुत करने के समूह का नाम संघठन है।

संघठन बनाने का उद्देश्य आडम्बर के लिए नहीं ब्लकि समष्टि हित को ध्यान में रखते हुए पूज्य शङ्कराचार्य जी द्वारा प्रदत भारत को धर्म नियन्त्रित, पक्षपात विहीन, शोषण विर्निमुक्त , सर्वहितप्रद सनातन शास्त्र सम्मत हिन्दू राष्ट्र बनाने के लक्ष्य की पूर्ति के लिए है।

चयन प्रशिक्षण नियोजन इन तीन शब्दो के आधार पर ही भगवत्पाद शङ्कराचार्य ने स्वस्थक्रान्ति को उद्धाषित किया था।

पूज्य पुरीशङ्कराचार्य जी के शब्दों में:-

“चयन.....का अर्थ है जिन महानुभावो का जन्म ही सनातन परंपरा के अनुसार भारत के शासनतंत्र की स्थापना के लिए हुआ है ऐसे महानुभाव जो मेधाशक्ति सम्पन्न हैं उनका चयन करना उसके बाद प्रशिक्षण देना।
प्रशिक्षण..... हनुमानजी का अवतार राम कार्य के लिए हुआ था वो अपने स्वरूप को प्रसंगानुसार भूल चुके थे । जामवंत ने केवल इतना कहा......राम काज लगि तव अवतारा ....बस सुनते ही..सुनतहिं भयउ पर्वताकारा .....जिन महानुभावो का जन्म ही भारत मे स्वस्थ क्रांति और स्वस्थ शासन तंत्र की स्थापना के लिए हुआ हैं उनके प्रशिक्षण में गिने चुने घण्टो या दिन की ही अपेक्षा है वर्षो की नही।
प्रशिक्षण की प्रक्रिया पूर्ण होने पर नियोजन का प्रकल्प हम चलाएंगे।

साथ ही कार्य करने की हमारी तीन प्रक्रिया है
भू मार्ग
नभोमार्ग

भू गर्भ मार्ग

भू मार्ग में सेवा प्रकल्प हम चला रहे है इसे हम दुरुत रूप देना चाहते हैं।

भू गर्भ मार्ग में सेना चाहिए सेना का तात्पर्य सनातन अस्तित्व की रक्षा के लिए कटिबद्ध महानुभाव/विवेकशील महानुभाव।

नभोमार्ग.... से सद्भाव पूर्ण संवाद के माध्यम से सम्पर्क साधेंगे, सद्भावपूर्वक सम्वाद के माध्यम से सैद्धांतिक निर्णय और उसके क्रियान्वयन का प्रकल्प। इस प्रकार सम्पर्क ...सेवा... सेना के माध्यम से स्वस्थक्रान्ति को हम उद्भाषित करना चाहते हैं।

विश्वहृदय भारतमें धर्मनियन्त्रित पक्षपातविहीन शोषणविनिर्मुक्त सर्वहितप्रद सनातन शासनतन्त्रकी स्थापना अपेक्षित है । नीति तथा अध्यात्मविहीन वर्तमान शिक्षा तथा जीविका - पद्धति देहात्मवादको जननी है । इसके कारण महानगरोंके माध्यमसे संयुक्त परिवारका विलोप दृष्टिगोचर है । संयुक्त परिवारके विलोपके फलस्वरूप कुलधर्म, कुलदेवी , कुलदेवता , कुलगुरु , कुलवधू , कुलवर , कुलपुरुषका द्रुतगतिसे विलोप परिलक्षित है । इनके विलोपके फलस्वरूप वर्णसङ्करता तथा कर्मसङ्करताकी ; तद्वत् विषयलोलुपता

और बहिर्मुखताकी पराकाष्ठा परिलक्षित है । परम्पराप्राप्त वर्णाश्रमानुरूप कर्मोंके विलोपके फलस्वरूप भोजन करने तथा सन्तान उत्पन्न करनेका मात्र यन्त्र बनकर मनुष्यका अवशिष्ट रहना स्वाभाविक तथा सुनिश्चित है । नीति , प्रीति , स्वार्थ तथा परमार्थमें सैद्धान्तिक सामञ्जस्य अपेक्षित है । इनके सामञ्जस्यसे शान्तिमय तथा सुखमय जीवन सम्भव है । नीतिनिपुणता तथा अध्यात्मनिष्ठासे जीवनकी सार्थकता सुनिश्चित है ।

प्राइमरी विद्यालय से लेकर उच्च शिक्षा संस्थान मस्तिष्क निर्माण के केन्द्रों पर विधर्मीयों का क़ब्ज़ा है ! मनोरंजन के साधनों से , राजनैतिक संस्थानों के माध्यम से , आध्यात्मिक और धार्मिक संस्थानों के माध्यम से भी सनातन धर्म के विपरीत प्रचार हो रहा है ! विचारक लोगों तक यह बात पहुँचाई जाए।

हम अपने सिद्धांत को दार्शनिक, वैज्ञानिक और व्यावहारिक स्तर पर प्रस्तुत करें । 'तत्त्वपक्षपातो हि स्वभावो धियाम्' ! जीव और जीव की बुद्धि का स्वभाव है तथ्य का , तत्त्व का , सत्य का पक्षधर होना। अगर हम सत्य को दर्शन, विज्ञान. व्यवहार तीनों में सामञ्जस्य साधकर ख्यापित करने की क्षमता प्राप्त करलें तो पूरा विश्व हमको अपनाने के लिए तैयार है । कम्युनिस्ट कम्युनिस्ट बनें रहें , क्रिश्चियन क्रिश्चियन

बनें रहें , मुस्लिम मुस्लिम बनें रहें लेकिन वह ह्रदय से हमारे सिद्धांत को स्वीकार करेंगे ।

देवर्षि नारद जी और भक्त प्रह्लाद जी की दिव्यता को अपने जीवन में ढालना होगा ! श्री नारद जी की विशेषता है कि वह सबको आत्मस्वरूप और आत्मीय समझते हैं।

भक्त प्रवर प्रह्लाद जी की दिव्यता भी हमारे जीवन में प्रतिष्ठित हो। भक्त प्रह्लाद जी की दिव्यता है सम्बन्ध का निर्वाह करते हुए सिद्धांत का त्याग नहीं करना । सिद्धांत के नाम पर सम्बन्ध को तिलांजलि न दें। सम्बन्ध के नाम पर सिद्धांत को तिलांजलि न दें। दोनों का सैद्धान्तिक सामञ्जस्य हो !

हिन्दू राष्ट्र के लिए तटस्थ होकर देखना बंद करिए तदर्थ होकर प्रयास करना प्रारंभ करिए। तटस्थ होकर मत देखिये, बीड़ा उठाइये , संकल्प लीजिए की मुझे भारत को हिन्दू राष्ट्र करना है । तटस्थ होकर सभी देखतें हैं । क्या मेरे घर भोजन बनेगा ? घर के जितने सदस्य हैं सभी तटस्थ होकर यही कहेंगे कि क्या मेरे घर भोजन बनेगा ? अगर घर में भोजन बनाना है तो भोजन बनाने का उपक्रम करो । आखिर हम आप ही तो हिन्दू राष्ट्र लाएंगे ना ?”

अत: आप समस्त स्नेही स्वजनों से विनम्र निवेदन है कि ऋग्वेदीय पूर्वाम्नाय श्रीगोवर्द्धनमठ - पुरी पीठाधीश्वर अनंत विभूषित शिवस्वरुप श्रीमद्जगद्गुरू शङ्कराचार्य पूज्य गुरुदेव भगवान के द्वारा संचालित धर्म संघ, पीठ परिषद एवं आदित्यवाहिनी /आनंद वाहिनी के तत्वावधान में अपने अपने क्षेत्र में भारत को हिन्दू राष्ट्र बनाने एवं सनातन धर्म के उत्कर्ष हेतु गति प्रदान करते हुए संगोष्ठी का आयोजन करें एवं एक दूसरे के पूरक बनें।

सम्बद्ध क्षेत्रको सुसंस्कृत, सुरक्षित और स्वावलम्बी बनानेकी भावनासे प्रतिदिन प्रत्येक परिवारसे एक घण्टा समय (श्रमदान) एवम् एक रुपया सहयोग (अर्थदान) के माध्यमसे सनातनशिक्षापद्धति तथा जीविका - पद्धतिको प्रोत्साहित करें।

निश्चय ही हम आप सभी के पूर्व जन्मों के पुण्य उदय हुए हैं कि पूज्य गुरुदेव जी की कृपा और पूर्वजों एवं देवताओं के अनुग्रह से हमें पूज्य श्रीमज्जगद्गुरू शङ्कराचार्य पुरीपीठाधीश्वर जी के राष्ट्रोत्कर्ष अभियान में सेवा करने का देव-दुर्लभ सुअवसर प्राप्त हुआ है।

पुज्य श्रीमज्जगद्गुरू पुरीठाधीश्वर शङ्कराचार्य जी द्वारा आने वाले ४२ माह की अल्पावधि में भारत को हिन्दू राष्ट्र बनाने की उद्घोषणा के

लक्ष्य की पूर्ति के लिए एक वर्ष के भीतर आदित्य वाहिनी के सवा लाख की संख्या में सदस्य बनाने का आवाह्न किया गया है ।

इस क्रम में अभी तक जिन राज्यों में प्रान्तीय स्तर पर आदित्य वाहिनी के अध्यक्ष/संयोजक बनाये जा चुके हैं उन प्रत्येक प्रान्तीय अध्यक्ष/संयोजक का दायित्व है कि वह प्रथम राज्य को उत्तर, पूर्व, दक्षिण, पश्चिम और मध्य , पाँच इकाई बनाकर पाँच राज्य स्तरीय प्रभारी बनाए और यह प्रयास हो कि इन पाँच प्रभारियों में समाज के सभी वर्ग हों और इन पाँच प्रभारियों के माध्यम से यह सुनिश्चित करें कि प्रान्त के प्रत्येक ज़िला स्तर पर प्रभारी बनाकर संगोष्ठी कार्यक्रम शुरू हो ।

फिर उस ज़िला स्तर के प्रभारी के माध्यम से प्रत्येक तहसील और क्रमशः पंचायत स्तर पर संगोष्ठी संयोजक बनाने की प्रकिया पूर्ण हो और प्रत्येक संयोजक के माध्यम से आदित्य वाहिनी के समाज के प्रत्येक वर्ग से सदस्य बनाएँ जाएँ और प्रत्येक सदस्य को कुटुम्ब एप्प के माध्यम से सदस्यता क्रमांक दिया जाए । हर एक सदस्य अपने अपने माध्यम से कम से कम दस नए सदस्यों को आदित्य वाहिनी के संगठन में समूह के माध्यम से जोड़े ।

प्रान्तीय अध्यक्ष/संयोजक प्रत्येक सप्ताह पाँच इकाई प्रभारियों से समीक्षा करके उसका विवरण राष्ट्रीय पदाधिकारियों को दें और राष्ट्रीय पदाधिकारी भी प्रान्तीय संयोजकों के साथ पाक्षिक (प्रत्येक मास अमावस्या और पूर्णिमा के दिन रात्री ९ से १० बजे) ज़ूम या किसी अन्य एप्प के माध्यम से यान्त्रिक विधा से सामूहिक समीक्षा/समन्वय संगोष्ठी रखें जिसमें पीठपरिषद् , आदित्य वाहिनी और आनन्द वाहिनी के राष्ट्रीय और प्रान्तीय स्तर के सभी पदाधिकारी सम्मिलित होंगे ।

प्रत्येक प्रान्तीय अध्यक्ष/संयोजक यह निर्धारित करें कि तीन महीने में उनके प्रान्त में कितने ज़िला स्तर पर संगोष्ठी आयोजित करने का और सदस्य बनाने का क्या लक्ष्य है ।

आप सभी से अनुरोध है कि जो कोई भी धर्म परायण राष्ट्रभक्त महाराज श्री के अभियान में साथ देना चाहते हैं , जिनमें पूर्व जन्म का उनका पुण्य है एवं सवा घंटा साधना का बल है तभी सहयोगी हो सकते हैं , ऐसे राष्ट्रभक्तों को एकत्रित कर गुरूदेव के भारत को हिन्दू राष्ट्र बनाने के लक्ष्य की पूर्ति हेतु अपने-अपने क्षेत्रमें साप्ताहिक सङ्गोष्ठी प्रकल्प को बैनर लगाकर सुचारू और नियमित रूप से चलावें एवं अपनी गतिविधि की विज्ञप्ति समाचार पत्रों को दें एवं प्रकाशित विवरण को ही आदित्य वाहिनी के समूह में साझा करें।

श्रीगोवर्द्धनमठ - पुरीपीठ -आदित्य वाहिनी इत्यादि किसी भी ग्रुप में कोई भी सदस्य अन्य मैसेज, फ़ोटो , विडियो इत्यादि साझा नहीं करें और व्यर्थ के वाद विवाद से बचें। अपने विचारों और संदेशों को महाराज जी के विडियो के माध्यम से कहें। गुरूदेव जी के निर्देशानुसार सद्भाव पूर्वक सम्वाद के माध्यम से लोगों को जोड़ना है।

हम सबका दायित्व है कि अपने अपने प्रभाव क्षेत्र में एक आदित्यवाहिनी शाखा का गठन करें और उसकी सूचना मान्य पदाधिकारियों तक पहुंचाए।

सिद्ध पुरूष के मार्गदर्शनसे सबका कल्याण सुनिश्चित है !

हर हर महादेव !

पीठ परिषद् - आदित्य वाहिनी - आनंद वाहिनी

(ऋग्वेदीय पुर्वाम्नाय श्रीगोवर्द्धनमठ पुरीपीठ)

ऋग्वेदीय पूर्वाम्नाय श्रीगोवर्द्धनमठ पुरीपीठ - संक्षिप्त परिचय

श्रीमज्जगद्गुरु शङ्कराचार्य स्वामी निश्चलानन्द सरस्वतीजी के द्वारा प्रतिष्ठित और सञ्चालित सामाजिक धार्मिक संस्थान :-

१. पीठपरिषद , आदित्यवाहिनी एवं आनन्दवाहिनी :- समाजको सुबुद्ध, स्वावलम्बी, सत्यसहिष्णु एवं सेवापरायण बनानेका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अभियान ; अन्योंके हितका ध्यान रखते हुए हिन्दुओके अस्तित्व तथा आदर्शकी रक्षा, देशकी सुरक्षा और अखण्डताके लिए कटिबद्धता ; शील, स्नेह, शुचिता, सुन्दरता, सुमति, सम्पत्तिसम्पन्न शान्त एवम् सुखमयजीवनका प्रशिक्षण। तद्वत सम्बद्ध क्षेत्रको सुसंस्कृत, सुरक्षित और स्वावलम्बी बनानेकी भावनासे प्रतिदिन प्रत्येक परिवारसे एक घण्टा समय (श्रमदान) एवम् एक रुपया सहयोग (अर्थदान) के माध्यमसे सनातनशिक्षापद्धति तथा जीविका - पद्धतिको प्रोत्साहन।

'**पीठपरिषद्**' की स्थापना चैत्रशुक्ल - नवमी, शनिवार, वि.सः 2049, तदनुसार 4 अप्रेल 1992 ।

'**आदित्यवाहिनी**' की स्थापना पौषशुक्ल - तृतीया , शुक्रवार, वि.सः 2050, तदनुसार 14 जनवरी 1994।

'**आनन्दवाहिनी**' की स्थापना श्रावण - शुक्ल पञ्चमी, शनिवार, वि.सः 2051, तदनुसार 13 अगस्त 1994 ।

२. हिन्दु - राष्ट्रसङ्घ (स्थापित आषाढ - शुक्ल - द्वितीया वि,स. ,2067) विश्वके हिन्दुबहुलराष्ट्रोंको एवम् हिन्दुओंको एक सूत्रमें सन्निहित करनेका अभियान।

३. राष्ट्रोत्कर्ष - अभियान :- सम्पूर्ण राष्ट्रसे सुशील , ओजस्वी , शूर तथा सर्वहितप्रद धार्मिक , राजनैतिक , सामाजिक , आर्थिक , नैतिक,

वैज्ञानिक प्रतिभावान् व्यक्तिओंका चयनकर और उन्हें प्रशिक्षण प्रदानकर व्यक्ति तथा समाजको सुसंस्कृत , सुशिक्षित , सुरक्षित , सम्पन्न , सेवापरायण , स्वस्थ और सर्वहितप्रद बनानेका विश्वस्तरपर उद्योग।

४. श्रीवृन्दावन (उ. प्र.) में श्रीहरिहर - आश्रम
प्रयाग (उ. प्र.) में श्रीशिवगङ्गा आश्रम
होशियारपुर (पञ्जाब) में श्रीविमलाम्बा संस्थानम्
काशी (उ. प्र.) में श्रीदक्षिणामूर्ति - पूर्वाम्नायमठ
रायपुर (छ. ग.) में सुदर्शनसंस्थानम्

५. स्वस्तिप्रकाशनसंस्थानम् (स्थापित श्रीरामनवमी , वि.सः 2039)

श्रीमज्जगद्गुरु - पुरीशङ्कराचार्य - महाभागद्वारा विरचित ग्रंथ
"राष्ट्रोत्कर्ष-अभियान" से सङ्कलित

संगोष्ठी प्रारूप - समय सारिणी

संगोष्ठी समयावधि - एक से दो धण्टा

१. मङ्गलाचरण - ५ मिनिट

२. श्रीहरिगुरूवन्दना - ५ मिनिट

३. सामूहिक नाम संकीर्तन - ५ मिनिट

४. श्रीहनुमान चालीसा एक से सात बार - ५ से - ३५ मिनिट

५. नीति चालीसा/नीति-सावित्री/नीति-निधि

ग्रन्थ का पठन - १० मिनिट

६. ग्रन्थ विचार विमर्श एवं संगोष्ठी परिचर्चा - १० से - १५ मिनिट

७. पुरीपीठाधीश्वर शंकराचार्य जी का विडियो सन्देश - १० मिनिट

८. जयघोष गान’ - ५ मिनिट

९. हिन्दू राष्ट्र गान ‘हमारा प्यारा हिन्दू द्वीप’ - ५ मिनिट

१०. सङ्घठन गान - जाग रे ! जाग रे ! जाग रे ! - ५ मिनिट

११. प्रार्थना एवं - ५ मिनिट

१२. पारम्परिक जयघोष - ५ मिनिट

प्रसाद वितरण , दरिद्रनारायण सेवा ,

पौधे-वृक्षारोपण , प्याऊ सेवा , कम्बल वितरण

आदि अन्य समाज सेवा प्रकल्प - १० - मिनिट

श्रीहरिः
श्रीगणेशाय नमः

१. मङ्गलाचरण

नारायणाखिलगुरो भगवन् नमस्ते (श्रीमद्भागवत ८.३.३२)

हे जगद्गुरो , प्रभो , नारायण ! आपको नमस्कार ।
क्लीं नमो वरदाय विघ्नहर्त्रे । (गणेशपूर्वतापिन्युपनिषत्)
सच्चिदानन्दस्वरूप वरदाता विघ्नहर्ता श्रीगणेशको नमस्कार ।

जनकसुता जग जननि जानकी। अतिसय प्रिय करुनानिधान की॥
ताके जुग पद कमल मनावउँ। जासु कृपाँ निरमल मति पावउँ॥
(श्रीरामचरितमानस बालकाण्ड 4-18)

दुर्गति-नाशिनि दुर्गा जय जय, काल-विनाशिनि काली जय जय।
उमा-रमा-ब्रह्माणी जय जय , राधा-सीता-रुक्मिणि जय जय ॥
साम्ब सदाशिव, साम्ब सदाशिव, साम्ब सदाशिव, जय जय शंकर।
हर हर शंकर दुखहर सुखकर अघ-तम-हर हर हर शंकर॥
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥
जय जय दुर्गा , जय मा तारा । जय गणेश जय शुभ-आगारा॥
जयति शिवाशिव जानकिराम । गौरीशंकर सीताराम॥
जय रघुनन्दन जय सियाराम । व्रज-गोपी-प्रिय राधेश्याम॥
रघुपति राघव राजाराम । पतितपावन सीताराम॥
(साभार - कल्याण पत्रिका गीताप्रेस गोरखपुर)

२. श्रीहरिगुरुवन्दना
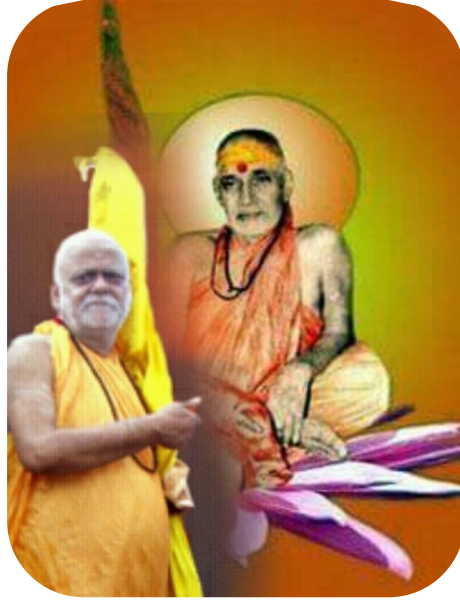
नारायण महाविष्णो श्रीधरानन्त केशव ।
वासुदेव जगन्नाथ हृषीकेश नमो नमः ॥

हे नारायण , महाविष्णो , श्रीधर , अनन्त , केशव , वासुदेव , जगन्नाथ , हृषीकेश, नमस्कार है , नमस्कार है ॥

त्वय्यात्मनि जगन्नाथे मम मनो रमतामिह ।
कदा ममेदृशं जन्म मानुषं सम्भविष्यति ॥

हे आत्मस्वरूप जगन्नाथ ! मेरा मन आपमें यहाँ रमण करने योग्य हो सके , मेरा ऐसा मनुष्य जन्म कब सम्भव हो सकेगा ? ॥

मन्नाथः श्रीजगन्नाथो मद्गुरुः श्रीजगद्गुरुः ।
ममात्मा सर्वभूतात्मा तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

मेरे नाथ श्रीजगन्नाथ हैं, मेरे गुरु श्रीजगद्गुरु हैं, शोधित अहमर्थस्वरूप में सब प्राणियोंका आत्मरूप हूँ। उस सर्वात्मस्वरूप जगद्गुरु जगन्नाथसंज्ञक श्रीगुरुदेवके लिए नमस्कार है॥

चैतन्यं शाश्वतं शान्तं व्योमातीतं निरञ्जनम् ।
नादबिन्दुकलातीतं तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

जो चैतन्य, सनातन, शान्त, आकाशसे अतीत, माया कालुष्यविरहित, नाद - बिन्दु - कलासे पर हैं ; उन श्रीगुरुदेवके लिए नमस्कार है॥

परमानन्दसमुद्रोल्लासनिवासैकपूर्णिमा ज्योत्स्ने ।
श्रीमत्करपात्रचरणसरसीरुहपादुके वन्दे ॥

परमानन्दरूप समुद्रके उल्लासके उद्गमस्थान पूर्णचन्द्रज्योतिःस्वरूप श्रीमत्करपात्रस्वामीके चरणकमलकी दोनों पादुकाओंकी वन्दना करता हूँ ॥

संसृतिसागरनिपतल्लोकसमुद्धारकारणीभूते ।
श्रीमत्करपात्रचरणसरसीरुहपादुके वन्दे ॥

जन्म-मृत्यु, सुख-दुःखादिकी अनादि और अजस्र परम्परारूपसंसृतिसागरमें निमग्न प्राणियोंके समुद्धारमें हेतुस्वरूप श्रीमत्करपात्रस्वामीके चरणकमलकी दोनों पादुकाओंकी वन्दना करता हूँ ॥

वन्दे विज्ञाननिस्यन्दां सच्चिदानन्दकन्दलीम् ।
शङ्कराचार्यवर्याणां वाक्सुधां रसशेवधिम् ॥

विज्ञानघन सच्चिदानन्दकन्द शङ्कराचार्यप्रवरकी रसनिधि - वाक्सुधाकी वन्दना करता हूँ ॥

पूर्वाम्नायपुरीपीठचिदाकाशस्वयम्प्रभाः ।
गुरवो निश्चलानन्दा विजयन्ते सतां हृदि ॥

चिदाकाशस्वरूप पूर्वाम्नाय - पुरीपीठकी स्वयंप्रभा सत्पुरुषोंके हृदयमें विद्यमान गुरुवर विजयश्रीको प्राप्त हैं ॥
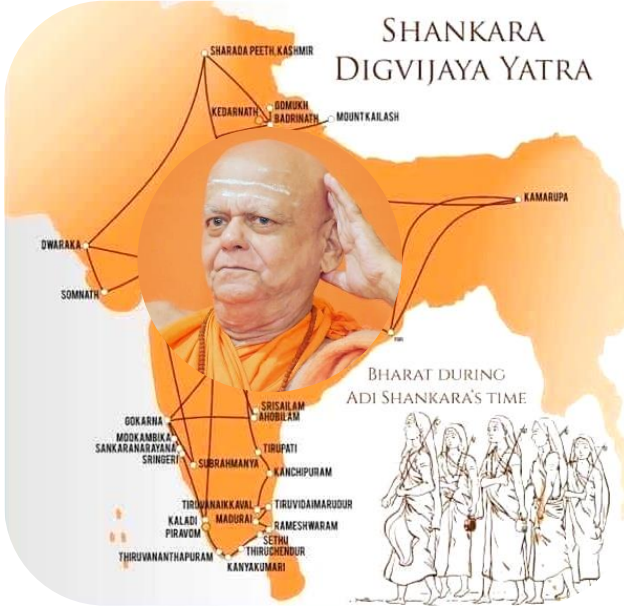
श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे ! हे नाथ ! नारायण ! वासुदेवा !
श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे ! हे नाथ ! नारायण ! वासुदेवा !
गोविन्द जय जय ! गोपाल जय जय !
गोविन्द जय जय ! गोपाल जय जय !
राधा-रमण हरि गोविन्द जय जय !
राधा-रमण हरि गोविन्द जय जय !
श्री राम ! जय राम ! जय जय राम !

सर्वसुमङ्गल तारक हरिनाम, श्रीराम जय राम जय जय राम।
भवभयभञ्जक उद्धारक नाम, श्रीराम जय राम जय जय राम॥
कलिमलदाहक शान्तिविस्तारक, श्रीराम जय राम जय जय राम।
रविकुलभासक कीर्तिविस्तारक, श्रीराम जय राम जय जय राम॥
दनुजविध्वंसक गोद्विजरक्षक, श्रीराम जय राम जय जय राम।
श्रुतिसेतुपालक सन्तसंरक्षक, श्रीराम जय राम जय जय राम॥
सानुज तापस पाणिधनुसायक, श्रीराम जय राम जय जय राम।
कृपासिन्धु भक्तजनपरिपालक, श्रीराम जय राम जय जय राम॥
वल्कलवसन शोभा अति सुन्दर, श्रीराम जय राम जय जय राम।
जटाजूटसुभग श्रीपति सुन्दर, श्रीराम जय राम जय जय राम॥

रचयिता - पुरीपीठाधीश्वर अनन्तश्रीविभूषित श्रीमज्जगद्गुरु
शङ्कराचार्य स्वामी निश्चलानन्दसरस्वती

४. श्रीहनुमान चालीसा' एक से सात बार
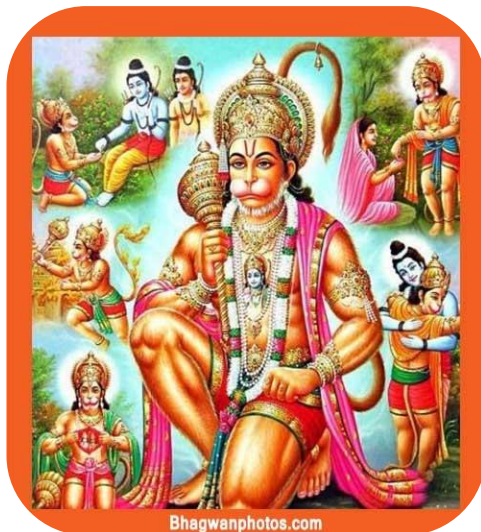
दोहा :

श्रीगुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि।
बरनऊं रघुबर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि।।
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन-कुमार।
बल बुद्धि बिद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस बिकार।।

चौपाई :

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर। जय कपीस तिहुं लोक उजागर।।
रामदूत अतुलित बल धामा। अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा।।

महाबीर बिक्रम बजरंगी। कुमति निवार सुमति के संगी।।
कंचन बरन बिराज सुबेसा। कानन कुंडल कुंचित केसा।।
हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै। कांधे मूंज जनेऊ साजै।
संकर सुवन केसरीनंदन। तेज प्रताप महा जग बन्दन।।
विद्यावान गुनी अति चातुर। राम काज करिबे को आतुर।।
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया। राम लखन सीता मन बसिया।।
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा। बिकट रूप धरि लंक जरावा।।
भीम रूप धरि असुर संहारे। रामचंद्र के काज संवारे।।
लाय सजीवन लखन जियाये। श्रीरघुबीर हरषि उर लाये।।
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई। तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई।।
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं। अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं।।
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा। नारद सारद सहित अहीसा।।
जम कुबेर दिगपाल जहां ते। कबि कोबिद कहि सके कहां ते।।
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा। राम मिलाय राज पद दीन्हा।।
तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना। लंकेस्वर भए सब जग जाना।।
जुग सहस्र जोजन पर भानू। लील्यो ताहि मधुर फल जानू।।
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं। जलधि लांघि गये अचरज नाहीं।।
दुर्गम काज जगत के जेते। सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते।।
राम दुआरे तुम रखवारे। होत न आज्ञा बिनु पैसारे।।
सब सुख लहै तुम्हारी सरना। तुम रक्षक काहू को डर ना।।
आपन तेज सम्हारो आपै। तीनों लोक हांक तें कांपै।।

भूत पिसाच निकट नहिं आवै। महाबीर जब नाम सुनावै।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा।।
संकट तें हनुमान छुड़ावै। मन क्रम बचन ध्यान जो लावै।।
सब पर राम तपस्वी राजा। तिन के काज सकल तुम साजा।
और मनोरथ जो कोई लावै। सोइ अमित जीवन फल पावै।।
चारों जुग परताप तुम्हारा। है परसिद्ध जगत उजियारा।।
साधु-संत के तुम रखवारे। असुर निकंदन राम दुलारे।।
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता। अस बर दीन जानकी माता।।
राम रसायन तुम्हरे पासा। सदा रहो रघुपति के दासा।।
तुम्हरे भजन राम को पावै। जनम-जनम के दुख बिसरावै।।
अन्तकाल रघुबर पुर जाई। जहां जन्म हरि-भक्त कहाई।।
और देवता चित्त न धरई। हनुमत सेइ सर्ब सुख करई।।
संकट कटै मिटै सब पीरा। जो सुमिरै हनुमत बलबीरा।।
जै जै जै हनुमान गोसाईं। कृपा करहु गुरुदेव की नाईं।।
जो सत बार पाठ कर कोई। छूटहि बंदि महा सुख होई।।
जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा। होय सिद्धि साखी गौरीसा।।
तुलसीदास सदा हरि चेरा। कीजै नाथ हृदय मंह डेरा।।

दोहा : पवन तनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप।।

५. नीति चालीसा/नीति-सावित्री/नीति-निधि ग्रन्थ का पठन - १० मिनिट
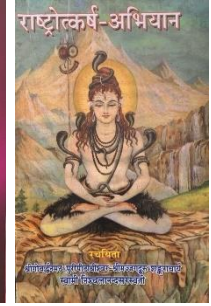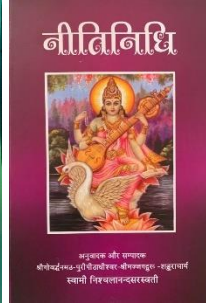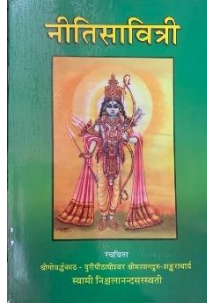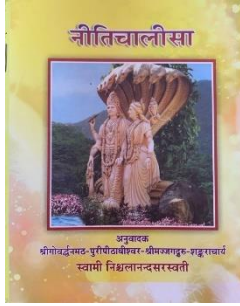
६. ग्रन्थ विचार विमर्श एवं संगोष्ठी परिचर्चा - १० से - १५ मिनिट

७. पुरीपीठाधीश्वर शंकराचार्य जी का विडियो सन्देश - १० मिनिट
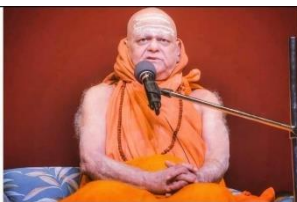
८. जय घोष

धर्मस्य जयोऽस्तु, अधर्मस्य नाशोऽस्तु , प्राणिषु सद्भावनाऽस्तु ,
विश्वस्य कल्याणमस्तु गोमातुः जयोऽस्तु , गोहत्यायाः निरोधोऽस्तु

धर्मकी जय हो ! अधर्मका नाश हो ! प्राणियोंमें सद्भावना हो !
विश्वका कल्याण हो ! गोमाताकी जय हो ! गोहत्या बन्द हो !
भारत अखण्ड हो !

धर्मस्य हि जयो भूयादधर्मस्य पराजयः ।
भूयात्प्राणिषु सद्भावो विश्वस्यास्य शिवं सदा ॥

धर्मकी जय हो, अधर्मका नाश हो, प्राणियोंमें सद्भावना हो, इस विश्वका सदा कल्याण हो ॥

गवां वै मन्त्रमूर्त्तीणां पुनर्भूयाज्जयो जयः।
कलङ्को गोवधोद्भूतः प्रभो राष्ट्रादपैतु नः ॥
मन्त्रमूर्ति गोवंशकी पुन : जय हो , जय हो ।
हे प्रभो ! हमारे राष्ट्रसे गोवधसे समुत्पन्न कलङ्क दूर हो ॥

भूयाद्भारतमस्माकमखण्डं धर्ममण्डितम् ।
स्वामिनां करपात्राणां वर्द्धतां धर्मसंहतिः ॥
हमारा भारत अखण्ड और धर्मसमन्वित हो ।
करपात्रस्वामीके द्वारा संस्थापित धर्मसङ्घ (पीठ परिषद्)
उत्कर्षको प्राप्त हो ॥

शम्भो हरहरेत्युच्चैर्महादेवेति गर्जनम् ।
सद्धर्मवर्त्मपान्थानामस्माकं राजतां भुवि ॥
उच्चस्वरसे शम्भो हर - हर महादेवका गर्जन हो ।
सनातनधर्ममार्गपर प्रयाण करनेवाले हमारे पथिक भूमण्डलपर
सुशोभित हों ।

शुभं भूयाद्धि विश्वस्य प्राणिनः सन्तु निर्भयाः।
धर्मवन्तश्च मोदन्तां ब्रह्मज्योतिः समेधताम् ॥
विश्वका कल्याण हो , प्राणी निर्भय हों तथा धर्मात्मा प्रमुदित हों ,
ब्रह्मजिज्ञासुओंके हृदयमें स्वप्रकाश ब्रह्मविज्ञान उद्दीप्त हो ॥

९. हमारा प्यारा हिन्दुद्वीप , हम हैं इसके प्रहरी और प्रदीप।

हमारा प्यारा हिन्दुद्वीप , हम हैं इसके प्रहरी और प्रदीप।
अब उठो जगो हे आर्यवीर, उत्ताल प्रचण्ड समरसिन्धु समीप।
हे सुभट विकट विकराल काल, प्रखर प्रबल शूर शस्त्रपाणि महीप ॥
उदकादि सप्तसिन्धु सुशोभित, हमारा प्यारा दिव्य हिन्दुद्वीप।
विश्वहृदय यह भारतभूषित, हम हैं इसके प्रहरी और प्रदीप ॥
सबसे न्यारा सबका प्यारा, सर्वसुमङ्गल सुशोभित सिन्धुसमीप।
ब्रह्मर्षि दधीचि कश्यप गौतम, तुला विदुर लव्य कायव्य कुलदीप ॥
गुरुकुलगौरव रघुकुलसौरभ, पुरुषोत्तम रामभद्र और दिलीप।
जनक जानकी जनजीवनधन, शुचि सत्यशील करुणासिन्धु सुदीप ॥
श्रुति सती सन्त शुचि सत्यशील, मन्वादि राजर्षि भूपति अम्बरीष ।
गङ्ग हिम सेतु इन्दु मानसर, मणि वज्र इन्द्र हिरण्य मेघ गिरीश ॥
गो-द्विज-गुरु-धर्मरक्षक अर्थ अर्जक, कामपालक मोक्षरत कालातीत।
माता-पिता-अतिथि -परिपालक, देवसमर्चक आत्मरूप कर्मातीत ॥

हमारा प्यारा हिन्दुद्वीप , हम हैं इसके प्रहरी और प्रदीप।

रचयिता - पुरीपीठाधीश्वर अनन्तश्रीविभूषित श्रीमज्जगद्गुरु
शङ्कराचार्य स्वामी निश्चलानन्दसरस्वती

१०. संघठन गान

सनातन चिन्ह

सनातन ध्वज

जाग रे ! जाग रे ! जाग रे ! आदित्यवाहिनी जाग रे !

आनन्दवाहिनी जाग रे ! हे भारतभाग्य जागो रे !

कर भारत अखण्ड देश रे ! हर गोहत्या-संक्लेश रे !

हर सती सन्त सुरताप रे ! कर विप्र-धरणी उद्धार रे !

कर व्यासपीठ आदर्श रे ! कर प्रजातंत्र उद्धार रे !

कर आर्यावर्त विस्तार रे ! कर शीलस्नेह संचार रे !

हो हर हिन्दू सेनानी ! हो हर हिन्दू सनातनी !

क्षिप्रा काबेरी-नर्मदा गंगा-यमुना निर्मला लें शिव-शक्ति-अवतार रे !

हो पितृभक्त श्रीराम तू ! हो सीता और सावित्री !

हो गुरुभक्त हनुमान तू ! क्रान्तिकारी प्रह्लाद रे !

हो करुनाकर रन्तिदेव ! हो श्रीहरिभक्ता कुन्ती दुर्गा-काली रणचंडी !

हो सेनापति स्कन्द रे ! जाग रे ! जाग रे ! जाग रे !

जाग रे ! जाग रे ! जाग रे ! आदित्यवाहिनी जाग रे !

रचयिता – श्रीमज्जगद्गुरु शङ्कराचार्य स्वामी निश्चलानन्दसरस्वती

११. प्रार्थना

छान्दोग्योपनिषत् २.१४.१ तथा महाभारत-शान्तिपर्व ३३७.३० के अनुसार प्रतिदिन पाँच वार भगवद्भजनसे सर्वार्थसिद्धि सुनिश्चित है। प्रातः ६ , मध्याह्न १० , अपराह्न २ , सायं ६ एवम् रात्रि १०बजे सर्वहितकी भावनासे निम्नलिखित प्रार्थना प्रत्येक सत्रमें पाँच - पाँच वार व्यक्तिगतरूपसे तथा आध्यात्मिक संस्थानोंके माध्यमसे नित्य कर्तव्य है। -

स्वस्त्यस्तु विश्वस्य खलः प्रसीदताम् , ध्यायन्तु भूतानि शिवं मिथो धिया । मनश्च भद्रं भजतादधोक्षजे , आवेश्यतां नो मतिरप्यहैतुकी ॥ (श्रीमद्भागवत ५ . १८ . ९)

“हे प्रभो ! विश्वका कल्याण हो, दुष्ट दुष्टतासे विनिर्मुक्त होकर प्रमुदित हो ! सब एक-दूसरेका हित चिन्तन करें । हमारा मन शुभमार्गमें प्रवृत्त हो तथा हमारी बुद्धि निष्कामभावसे आप स्वप्रकाश सदानन्दस्वरूप भगवान श्रीहरिमें निमग्न हो” ॥

१२. पारम्परिक जयघोष
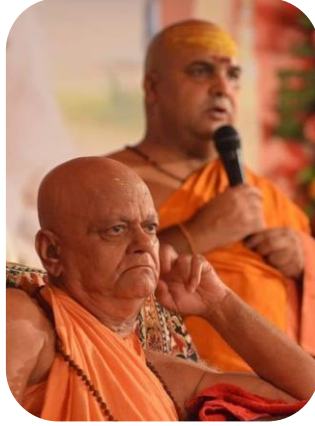
धर्म की..जय हो ! अधर्म का..नाश हो ! प्राणियों में..सद्भावना हो !
विश्व का..कल्याण हो ! गौमाता की...जय हो ! गोहत्या..बन्द हो !
भारत.. अखण्ड हो !
सर्वभूतहृदय धर्मसम्राट श्रीस्वामी करपात्रीजी महाराजकी.. जय हो !
जगन्नाथ महाप्रभु की ..जय हो !
श्रीबलभद्र महाप्रभु की..जय हो !
भगवती सुभद्रा देवी की..जय हो !
श्रीगोवर्द्धनमठ में भगवत्‌पाद श्रीआदिशङ्कराचार्य
के चिन्मय करकमलों से प्रतिष्ठित
श्रीगोवर्द्धननाथ की जय ... हो !
श्रीअर्धनारीश्वर भगवान की जय ... हो !
भगवती विमला देवी की ... जय हो !
भगवती कमला देवी की ... जय हो !
हर हर महादेव !

संघठनात्मक सूत्र
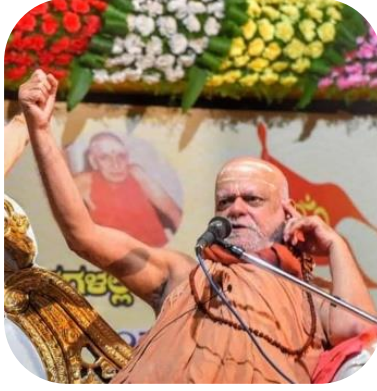
ध्यान रहे !

हमें नीति, शक्ति, सद्भाव और सामञ्जस्य (तालमेल)
के बल पर भारत को अखण्ड करना है।
अपने मानबिन्दुओं की रक्षा के लिए ओजस्वी बनना है।
रक्तवर्ण त्रिकोण वस्त्र पर श्वेत सूर्यचिह्नयुक्त हमारा ध्वज है।
दिशाहीन शासनतन्त्र को विश्वमञ्च से विदाकर
धर्मनियन्त्रित पक्षपातविहीन शोषणविनिर्मुक्त
शासनतन्त्र की स्थापना हमारा लक्ष्य है।
श्रीहरि गुरु का हमारे सिर पर वरद हस्त है,
हमारी विजय सुनिश्चित है।
ओजस्वी और विजयी बननेके लिए
भगवान् सूर्य और श्रीगुरुदेव की प्रार्थना हमारा कर्त्तव्य है।

ईश्वर के नामपर उद्यमहीन न बनना,
उद्यम के नाम पर अहंकारी न बनना, हमारा व्रत है।
ईश्वर से प्राप्त शक्ति का सदुपयोग करना और
ईश्वर की कृपा का ध्यान रखना हमारा धर्म है।
आलस्य, प्रमाद, लोभ, भय, भावुकता और अविवेक
के वश में होकर लक्ष्यहीन न होना हमारा शील है।
अपने विश्वहितकारी प्रशस्त मानबिन्दुओं के प्रति दार्शनिकता,
वैज्ञानिकता और शीलके बलपर मानवमात्र को
आस्थान्वित करना हमारा अभियान है।
प्रार्थना, संघशक्ति, उद्योगशीलता, सेवा और स्वस्थ
मार्गदर्शन के बल पर लक्ष्यसिद्धि हमारी साधना है।

ऋग्वेदीय पूर्वाम्नाय श्रीगोवर्द्धनमठ पुरीपीठाधीश्वर
श्रीमज्जगद्गुरू शङ्कराचार्य
स्वामी श्रीनिश्चलानन्द सरस्वतीजी महाराज

आविर्भाव - वैशाख शुक्ल पंचमी युधिष्ठिर सं० 2631
तुल्य ईसवी सन् पूर्व 507 वर्ष
तिरोभाव - कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा युधिष्ठिर सं० 2663
तुल्य ईसवी सन् पूर्व 475 वर्ष

सुसंस्कृत ★ सुशिक्षित ★ सुरक्षित ★ सम्पन्न ★ सेवापरायण ★ स्वस्थ

सर्वहितप्रद व्यक्ति तथा समाज की संरचना

कालक्रमसे विलुप्त ज्ञान-विज्ञान को प्रकट करना, विकृत ज्ञान-विज्ञान को विशुद्ध करना और सूत्रशैलीमें प्राप्त ज्ञान-विज्ञानको विशद करना तथा सनातनशास्त्रसम्मत व्यासपीठ और शासनतन्त्र को प्रतिष्ठितकर उनमें सामञ्जस्य स्थापित करना भगवत्पाद श्रीशङ्कराचार्यके अवतार का प्रयोजन

श्रीगोवर्द्धनमठ - पुरीपीठके 145वें श्रीमज्जगद्गुरु
शङ्कराचार्य पूज्यपाद स्वामी निश्चलानन्दसरस्वती महाभाग
(आविर्भाव - आषाढ कृष्ण त्रयोदशी विक्रम सं० 2000)

श्रीशिवावतार भगवत्पाद शङ्कराचार्य द्वारा संस्थापित चतुराम्नाय - चतुष्पीठ - दिग्दर्शन

दिशा/आम्नाय	मठ	मठस्थापन वर्ष	वेद	आचार्य	आचार्याभिषेक वर्ष	सन्यासी	ब्रह्मचारी	आराध्यदेव	आराध्यादेवी/पीठ	महावाक्य	गोत्र	सम्प्रदाय	तीर्थ	क्षेत्र
पूर्वाम्नाय	गोवर्द्धनमठ	ईसवी सन् पूर्व 486	ऋग्वेद	पद्मपाद	ईसवी सन् पूर्व 483	वन, अरण्य	प्रकाश	जगन्नाथ	विमला	प्रज्ञानं ब्रह्म	काश्यप	भोगवारि	महोदधि	पुरुषोत्तम
दक्षिणाम्नाय	शृङ्गेरीमठ	ईसवी सन् पूर्व 490	यजुर्वेद	हस्तामलक/सुरेश्वर	ईसवी सन् पूर्व 484	सरस्वती,भारती,पुरी	चैतन्य	आदिवराह	कामाक्षी	अहं ब्रह्मास्मि	भूर्भुवः	भूरिवारि	तुङ्गभद्रा	रामेश्वरम्
पश्चिमाम्नाय	शारदामठ	ईसवी सन् पूर्व 490	सामवेद	सुरेश्वर/हस्तामलक	ईसवी सन् पूर्व 489	तीर्थ,आश्रम	स्वरूप	सिद्धेश्वर	भद्रकाली	तत्त्वमसि	अविगत	कीटवारि	गङ्गा-गोमती	द्वारका
उत्तराम्नाय	ज्योतिर्मठ	ईसवी सन् पूर्व 492	अथर्ववेद	तोटक	ईसवी सन् पूर्व 484	गिरि,पर्वत,सागर	आनन्द	नारायण	पूर्णागिरि	अयमात्मा ब्रह्म	भृगु	आनन्दवारि	अलकनन्दा	बदरिकाश्रम

सन्दर्भ - श्रीगोवर्द्धनमठ - पुरीपीठाधीश्वर - श्रीमज्जगद्गुरु - शङ्कराचार्य स्वामी निश्चलानन्दसरस्वती द्वारा रचयित एवं स्वस्तिप्रकाशनसंस्थान द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ "श्रीशिवावतार - भगवत्पाद - शङ्कराचार्य" से संकलित